بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुबह शाम पढने के मस्नून अज्कार

मिनजानिब

इदारा दावत-ए-इस्लाम

बोरावड. (मकराना) राजस्थान

ये वो दुआए हे जिन्हें हमे रोज़ सुबह शाम पढ़ना चाहिए। पाबन्दी से ।

सुबह यानि फ़ज्र की नमाज़ के बाद और शाम यानि असर की नमाज़ के बाद के ज़िक्र अज़्कार। क्योंकि मग़रिब बाद रात हो जाती है। और इसकी वजाहत अबू दाउद हदीस नं.3667 में है की फ़ज्र से सूरज निकलने तक का और असर से गरूब होने तक अल्लाह के ज़िक्र की फज़ीलत आयी है।

1) तीन बार सुबह और तीन बार शाम "सूरह इख़्लास" بِسْمِ اللَّـهِ الرَّحْمَـٰنِ الرَّحِيمِ. قُلْ هُوَ اللَّـهُ أَحَدٌ، اللَّـهُ الصَّمَدُ، لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ، وَلَمْ يَكُن لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ. बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० क़ुल् हुवल्लाहु अहद्० अल्लाहुस्-समद्० लम् यलिद् व लम् यूलद्० व लम् यकुल्लहू कुफुवन् अहद्० तर्जुमा: (आप)कह दीजिए कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह बे नियाज़ है। उस की न कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद है। और न कोई उस की बराबरी का है। (क़ुरआन: 112) फ़ज़ीलत: एक तिहाई क़ुरआन पढ़ने के बराबर सवाब (बुखारी 5015)

2) तीन बार सुबह और तीन बार शाम "सूरह फ़लक़" بِسْمِ اللَّـهِ الرَّحْمَـٰنِ الرَّحِيمِ. قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ، مِن شَرِّ مَا خَلَقَ، وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ، وَمِن شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ، وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ. बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० क़ुल् अऊज़ु बिरब्बिल्-फ़-लक़० मिन् शर्रि मा ख़-लक़्० व मिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा व-क़ब्० व मिन् शर्रिन्नफ़्फ़ासाति फ़िल्अुक़द्० व मिन् शर्रि हासिदिन् इज़ा हसद्० तर्जुमा: (आप) कह दीजिए मैं पनाह माँगता हूँ सुबह के रब की, हर उस चीज़ की बुराई से जो उस ने पैदा की और अन्धेरे की बुराई से जब वह छा जाए। और गिरोहों पर पढ़-पढ़ कर फूँकने वालियों की बुराई से, और हसद करने वालों की बुराई से जब वह हसद करें। (क़ुरआन: 113) फ़ज़ीलत-अल्लाह की पनाह में आ जाते हैं, मख्लूक़ के शर, शैतान, जिन्नात, नज़रे बद, हसद, जादू, से बचाओ (तिरमिज़ी 2058)

3) तीन बार सुबह और तीन बार शाम "सूरह नास" بِسْمِ اللَّـهِ الرَّحْمَـٰنِ الرَّحِيمِ. قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ، مَلِكِ النَّاسِ، إِلَـٰهِ النَّاسِ، مِن شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ، الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ، مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ. बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० कुल् अऊज़ु बिरब्बिन्नास० मालि-किन्नास० इलाहिन्नास० मिन् शर्रिल् वस्वासिल खन्नास० अल्लज़ी युवस्विसु फ़ीसुदूरिन्नास० मिनलजिन्नति वन्नास० तर्जुमा: (आप) कह दीजिए मैं पनाह माँगता हूँ इन्सानों के रब की, इन्सानों के हक़ीक़ी बादशाह की, इन्सानों के मअ़बूद की, वस्वसे (यानि बुरे ख्याल) डालने वाले (शैतान से जो आँखों से ओझल है उसकी) बुराई (शर) से, जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालता है, (चाहे वह) जिन्नों में से हो और (चाहे) इन्सानों में से हो। (कुरआन:114) फ़ज़ीलत- वही जो सूरह फ़लक़ की है।

4) एक बार सुबह और एक बार शाम "आयतुल कुर्सी" اللَّهُ لَا إِلَـٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَن ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِندَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَؤُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ "अल्लाहु लाइला-ह इल्ला हु-वल्हय्युल क़य्यूम ला तअ़ख़ुज़ुहू सि-नतुंव्-व ला नौमुल लहू मा फिस्समावाती व मा फ़िल्-अर्ज़ि मन् ज़ल्लज़ी यश्फ़अु इन्दहू इल्ला बि-इज़्निही यअ़ -लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् वला युहीतू-न बिशैइम्मिन् इ़ल्मिही इल्ला बिमा शा-अ वसि-अ़ कुर्सिय्युहुस समावाति वल अर-ज़ व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा व हवल् अ़लिय्युल् अ़ज़ीम० तर्जुमा: अल्लाह (वह है कि) उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, वह हमेशा ज़िन्दा और हमेशा क़ायम रहने वाला है, उसे न ऊँघ आती है न नींद, उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, कौन है जो उसके सामने बिना उसकी इजाज़त के (किसी की) सिफ़ारिश कर सके, जो कुछ लोगों के सामने है और जो कुछ पीछे हो चूका है वह सब जानता है, और लोग उसके इल्म में से किसी चीज़ पर पहुँच नहीं रखते मगर जितना वह खुद चाहे, उसकी कुर्सी छाई हुई है आसमानों और

ज़मीन पर, और इनकी हिफाज़त उसके लिए कुछ भी भारी नहीं होती, और वह बड़ी अज़मत वाला (महान) है। (कुरआन 2:255) फ़ज़ीलत: 1.जो सुबह पढ़े तो शाम तक और शाम को पढ़े तो सुबह तक शैतान से महफूज़ रहेगा। (नसाई 960) 2.हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ना जन्नत में दाखिले का जरिया। (सही अलतार्गीब 1595)

5) तीन बार सुबह और तीन बार शाम رَضِيتُ باللَّهِ رَبًّا، وَبِالْإِسْلامِ دِيناً، وَبِمُحَمَّدٍ صَلى اللَّهُ عَلَيهِ وَسَلَّمَ نَبِيًّا "रज़ीतु बिल्लाहि रब्बंव् वबिल् इस्लामि दीनंव् वबिमुहम्मदिन् (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नबिय्या० तर्जुमा: "में राज़ी हूँ अल्लाह के रब होने पर, और इस्लाम के दीन होने पर, और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नबी होने पर। फ़ज़ीलत- अल्लाह कयामत के दिन राज़ी होगा। (मुसनद अहमद 3388)

6) तीन बार सुबह और तीन बार शाम بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ "बिस्मिल्लाहिल्-लज़ी ला यज़ुर्रु मअइस्मिही शैउन् फ़िल्-अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ व हु-वस्समीअुल्-अलीम०" तर्जुमा: उस अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जिसके नाम की वजह से आसमान और ज़मीन में कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचा सकती, और वह खूब सुनने वाला खूब जानने वाला है। फ़ज़ीलत- पढ़ने वाले को कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगी। (अबू दाऊद 5088, तिरमिज़ी 3388)

7) सात बार सुबह और सात बार शाम حَسْبِيَ اللَّهُ لآ إِلَه إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ "हिस्बियल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व अलैहि तवक्कल्तु व हु-व रब्बुल्-अर्शिल् अज़ीम० तर्जुमा: मुझे अल्लाह ही काफी है, उसके सिवा कोई सच्चा मअबूद नहीं, उसी पर मैं ने भरोसा किया, और वह अर्शे अज़ीम का रब है।" फ़ज़ीलत- पढ़ने वाले को दुनियाबी और आख़िरत की फ़िक्रों में उसे

अल्लाह काफ़ी होगा। (अबू दाऊद 5081)

8) तीन बार सुबह سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ عَدَدَ خَلْقِهِ، وَرِضَا نَفْسِهِ، وَزِنَةَ عَرْشِهِ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهِ "सुब्हानल्लाहि व बिहिम्दही अ-द-द ख़ल्क़िही व रिज़ा नफ़्सिही, व ज़ि-न-त अ़र्शिही व मिदा-द कलिमातिही० तर्जुमा: अल्लाह अपनी तअरीफ़ों समेत पाक है अपनी मख़लूक़ की तादाद के बराबर, अपने नफ़्स की रजामंदी के बराबर, अपने अ़र्श के वज़न और अपने कलिमात की रोशनाई के बराबर। (मुस्लिम 2726)

9) तीन बार सुबह और तीन बार शाम أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ "अअूज़ु बिकलिमातिल्लाहित्-ताम्माति मिन् शर्रि मा ख़-लक़० तर्जुमा: मैं अल्लाह के पूरे कलमात की हिफाज़त में आता हूँ उस की मख़्लूक की बुराई (शर) से। फ़ज़ीलत- जहरीले जानवर का काटना नुकसान नहीं पहुँचायेगा। (मुस्लिम 2709)

10) दस बार सुबह और दस बार शाम "दरुदे इब्राहीम या यह छोटी दरूद शरीफ़" اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ " अल्लाहुम्-म सल्लि व सल्लिम् अ़ला नबिय्यिना मुहम्मद०" तर्जुमा- ऐ अल्लाह! हमारे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर दरूद और सलाम भेज। फ़ज़ीलत-1.क़यामत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफारिश नसीब होगी। (सही जामेअस्सगीर 6357) 2. एक बार दरूद शरीफ़ पढ़ने वाले पर अल्लाह दस रहमतें नाज़िल करता है, दस गुनाह माफ़ करता है, और दस दर्जे बुलंद हो जाते हैं।(नसाई 1297) और भी बहुत सारी फ़जीलतें हैं।

11) दस बार सुबह और दस बार शाम لا إله إلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، "ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहु ला शरी-क लहू लहुल-मुल्कु व़ लहुल-हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैईन् क़दीर०"

तर्जुमा : अल्लाह के सिवा कोई सच्चा मअ़बूद नहीं, वह अकेला (यकता) है, उसका कोई शरीक नहीं, उस की बादशाहत और उसी की ही तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है। फ़ज़ीलत- 1.दिन भर शैतान से हिफाज़त रहेगी। 2.दस गर्दनें आज़ाद करने के बराबर सवाब है। 3.100 नेकियाँ बेढ़ेंगी नामे आमाल में। 4.100 गुनाह माफ़। 5.कोई शख्स इसके अमल से बेहतर अमल नहीं लायेगा अलबत्ता वह शख्स जिसने उससे ज्यादा अमल किया (बुखारी 6403)

12) एक बार सुबह और एक बार रात اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَّا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ، خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَأَبُوءُ بِذَنْبِي فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ "अल्लाहुम्-म अन्-त रब्बी ला इला-ह इल्ला अन्-त ख़लक़्तनी व अना अ़ब्दु-क व अना अ़ला अ़हदि-क व वअ़्दि-क मस त-तअ़तु अअ़ूजुबि-क मिन् शर्रि मा सनअ़तु अबूउ ल-क बिनिअ़मति-क अ़लय्-य व अबूउ बिज़म्बी फ़ग़्फ़िर्ली फ़इन्न्हू ला यग़्फिरुज़्जुनू-ब इल्ला अन्-त० तर्जुमा: ऐ अल्लाह! तू मेरा रब है, तेरे सिवा कोई सच्चा मअ़बूद नहीं, तूने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूँ, और मैं अपनी ताक़त भर तेरे अहद और वादे पर क़ायम हूँ। अपनी की हुई बुराई से तेरी हिफ़ाज़त में आता हूँ। मैं अपने ऊपर तेरे इनाम का इक़रार करता हूँ और मैं अपने गुनाह का इक़रार करता हूँ, इसलियए तू मुझे माफ़ कर दे। क्योंकि तेरे सिवा कोई भी गुनाह माफ़ नहीं कर सकता। फ़ज़ीलत- शाम से पलहे मर गया तो जन्नत में जायेगा और रात में मर गया तो जन्नत में जायेगा। (बुखारी 6306)

13) एक बार सुबह और एक बार शाम (फ़ज्र की नमाज़ के बाद भी एक बार) اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْماً نَافِعاً، وَ رِزْقاً طَيِّباً، وَ عَمَلاً مُتَقَبَّلاً "अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क इ़ल्मन्-नाफ़िअ़ंव्- व रिज़्क़न् तय्यिबंव्- व-अ-मलम्-मु-त-क़ब्बला० तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मैं तुझसे मांगता हूँ नफ़ा देने वाला इल्म, औए पाकीज़ा

रिज़्क, और कुबूल होने वाला अमल। (इब्ने माज़ा 925)

14) सुबह या शाम 4 बार (शाम को अस्बहतु की जगह अम्सैतु पढ़ें) اللَّهُمَّ إِنِّي أَصْبَحْتُ (اَمْسَيْتُ) أُشْهِدُكَ وَأُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ، وَمَلاَئِكَتَكَ وَجَمِيعَ خَلْقِكَ، أَنَّكَ أَنْتَ اللَّهُ لا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ وَحْدَكَ لا شَرِيكَ لَكَ، وَأَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ "अल्लाहुम्-म इन्नी अस्बहतु (अम्सैतु) उश्हिदु-क व उश्हिदु ह-म-ल-त अ़र्शि-क मलाइ-क-त-क व जमी-अ़ ख़ल्क़ि-क अन न-क अन्-तल्लाहू ला इला-ह इल्ला अन्-त वह्द-क ला शरी-क ल-क व अन्-न मुहम्मदन् अ़ब्दु-क व रसूलु-क॰ तर्जुमा: ऐ अल्लाह! यक़ीनन मैं ने इस हालत में सुबह (शाम) की कि तुझे गवाह बनाता हूँ और तेरा अर्श उठाने वालों और तेरे फ़रिश्तों और तेरी मख़्लूक़ को इस बात पर गवाह बनाता हूँ की तू ही अल्लाह है, तेरे सिवा कोई सच्चा मअ़बूद नहीं, तू अकेला (यकता) है, तेरा कोई शरीक नहीं। और बेशक मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तेरे बन्दे और तेरे रसूल हैं। फ़ज़ीलत: जो एक बार पढ़ेगा अल्लाह उसके जिस्म का एक चौंथाई हिस्से को जहन्नम से आज़ाद कर देगा और जो दो बार पढ़ेगा उसका आधा हिस्सा और जो तीन बार पढ़ेगा तीन चौंथाई और जो चार बार पढ़ेगा उसके पूरे जिस्म को अल्लाह जहन्नम से आज़ाद कर देगा। (अबू दाउद 4/335)

✦सुबह और शाम को रसूल सल्ल. पर 10 बार दुरुद भेजने की फ़ज़ीलत

✦ रसूल-अल्लाह सल-अल्लाहू अलैही वसल्लम ने फरमाया जो शख्स मुझ पर सुबह 10 बार और शाम को 10 बार दुरुद भेजेगा तो उसको क़यामत के दिन मेरी शफाअत हासिल होगी

सही अल जामे-6357-हसन

सही अल तरगीब वा अल तरहीब, 659-हसन

✦ अल्लाहुम्मा सल्ली वा सल्लिम अला नबीयीना मुहम्मद

اللَّهُمَّ صلِّ وسلِّم علَى نبيِّنا مُحمّد

✦ ए अल्लाह हमारे नबी मुहम्मद सल-अल्लाहू अलैही वसल्लम पर रहमत और सलामती नाज़िल फरमा

✦ ऐबो को छुपाने की दुआ

✦ रसूल-अल्लाह सलअल्लाहू अलैही वसल्लम ने सुबह और शाम को इस दुआ को पढ़ना कभी नही छोड़ा

اللَّهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَتِي وَآمِنْ رَوْعَاتِي

अल्लाहुम्मास्तुर औराती, वा आमीन रौआती

✦ एह अल्लाह मेरे ऐबों को छुपा दे और मेरे दिल को मुतमईन कर दे

सुनन अबू दाऊद,जिल्द 3, 1637-सही